ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-9*February-2015

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की उच्चतर माध्यमिक स्तर की बालिकाओं में जोखिम स्वीकारने, नारी समानता मनोवृत्ति एवं व्यावसायिक रूचि

मेघराज चौधरी
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
ज्ञानदीप शि. प्र. महाविद्यालय,
शिकारगढ़, जोधपुर

सारांश

हमारी सामाजिक व्यवस्था इसी प्रकार की रही है जिसमें लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है। लड़कों की हर इच्छा को शिरोधार्य कर पूरा किया जाता है जबकि लड़कियों की सामान्य आवश्यकताओं को भी पूरा करना जरूरी नहीं समझा जाता। ऐसी स्थिति में बालिकाएँ, हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है।

मुख्य शब्द शिक्षा व्यवस्था, स्त्री शिक्षा, नारी समानता, संस्कृति

प्रस्तावना

एक शिक्षित एवं संस्कारी बालिका ही आदर्श बहन, माँ, पत्नी, पुत्री आदि विविध रूपों में प्रेम, दया, ममता व त्याग आदि की प्रतिमूर्ति होती है। उसके द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा, उसे समाज में ऊँचा स्थान दिला सकती है।

एक शिक्षित बालिका कर्मठ, निडर, योग्य व बुद्धिमान होती है। अनुसंधान से पता चलता है कि लिंग भेद न करने वाले समाजों में लड़कियाँ पढ़ाई में लड़कों से कहीं अच्छा प्रदर्शन करती है। आज की बालिकाएं शिक्षित होकर स्वाभिमान के साथ देश, समाज व अपने परिवारों को नई दिशा दे रही है।

भारतीय बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। पारिवारिक संस्कार उन्हें आज के साथ–साथ, आने वाले कल के जीवन हेतु पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ बनने पर जोर देते है। विद्यालय का वातावरण एवं पाठ्यक्रम उन्हें अपनी स्वयं की स्वतंत्रता, व्यक्तित्व और कैरियर के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ होने का आधार बनाता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

स्वामी विवेकानंद ने समाज में बालिकाओं की भूमिका को परिभाषित किया एवं उनके उन्नयन हेतु दी जा रही शिक्षा के स्वरूप को भी स्पष्ट किया है। उनका मानना था कि बालिकाओं की कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जो शिक्षा से हल न की जा सके।

यदि स्त्री शिक्षा का इतिहास देखा जाए तो वैदिक काल से ही स्त्रियों का समाज में पर्याप्त सम्मान रहा है। कहा भी गया है –''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' अर्थात जहॉ नारी की पूजा होती है वहा देवता निवास करते है।

बौद्धकाल में, स्त्री शिक्षा को त्याज्य समझा जाता था। वैदिक शिक्षा के अन्तर्गत स्त्रियों की जो उपनयन संस्कार की व्यवस्था थी वह लगभग समाप्त हो गई थी, फिर भी महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों को मठों और विहारों में रहने की आज्ञा दी थी। वे बौद्ध भिक्षुणियाँ कहलाती थी। उनमें से कुछ उच्च कोटि की विदुषी भी थी।

मध्यकालीन युग में बालिकाओं के लिए शिक्षा की कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। उस समय मुगलों का शासन था। बालिकाओं को बचपन में बालकों के साथ पढ़ाया जाता था, जब वे बड़ी हो जाती थी तो उन्हें घर पर ही पढ़ाया जाता था। हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम, रजिया सुलतान, नूरजहाँ, मुमताज महल तथा औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा विदुषी थीं।

ब्रिटिश काल में शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। अंग्रेजों ने शिक्षा के विकास हेतु अनेक प्रयास किये जिसमें मुख्य रूप से मैकाले का विवरण–पत्र, वुड का घोषणा–पत्र नाम से कुछ प्रस्ताव भारतीय शिक्षा व्यवस्था में रखे गए, जिनमें स्त्री शिक्षा को सरकार की स्पष्ट तथा मैत्रीपूर्ण सहायता का वचन दिया गया। इन पत्रों में स्पष्ट कहा गया कि जिन संस्थाओं को सहायता मिलेगी उनमें बालिका विद्यालय भी सम्मिलित हैं।

किसी भी समाज की जीवन शैली की निर्धारक उस समाज की संस्कृति होती है। यह संस्कृति समाज के विकास के मार्ग में सहायक एवं बाधक दोनों ही हो सकती है। संस्कृति के वाहक तत्कालिक ग्रंथ होते है। भारतीय समाज के संदर्भ में मनु स्मृति में प्रतिपादित किया गया है कि स्त्री को बाल्यकाल में पिता के, युवावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र के नियंत्रण व संरक्षण में रहना चाहिए, वह किसी भी अवस्था में स्वतंत्रता के योग्य नहीं है।

मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि कुछ कर गुजरने का साहस रखने वाली तथा जोखिम उठाने वाली बालिकाएँ आत्मविश्वासी हाती हैं और कई बार वे परिणाम की चिंता किए बिना ऐसे काम कर जाती हैं कि लोग उनके कारनामों को देखकर अचंभित रह जाते हैं।

वर्तमान समय में भी कई बालिकाएँ ऐसी हैं जो किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं है। आमतौर पर स्त्री को केवल गृहिणी के रूप में ही देखे जाने की परम्परा रही है, परन्तु आज की स्त्री ने इस भ्रांति को एकदम अस्वीकार कर दिया है उसने दिखाया है कि वह किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था इसी प्रकार की रही है जिसमें लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है। लड़कों की हर इच्छा को शिरोधार्य कर पूरा किया जाता है जबकि लड़कियों की सामान्य आवश्यकताओं को भी पूरा करना जरूरी नहीं समझा जाता। ऐसी स्थिति में बालिकाएँ, हीन भावना से ग्रस्त हो जाती है। उनकी महत्वाकांक्षाएँ दब कर रह जाती है और उनका बौद्धिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।

बालिकाएँ स्वभाव से अति संवेदनशील व भावुक होती है। ऐसे में यदि उन्हें घरेलू वातावरण भी संकुचित मिलता है तो उनमें असुरक्षा की भावना घर कर जाती है जो उन्हें मानसिक रूप से अपरिपक्व तथा सांवेगिक रूप से अस्थिर बना देता है। वे समय पर स्वय निर्णय नहीं ले पाती है या निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति रहती है।

बाल्यावस्था तक बालक तथा बालिकाओं का विकास शैक्षिक तथा बौद्धिक स्तर पर समान रूप से ही होता है परन्तु किशोर अवस्था में बालिकाओं का शारीरिक व बौद्धिक विकास, बालकों की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से होता है। इस काल में बालिकाएँ भावनात्मक रूप से अति संवेदनशील हो जाती है। विपरीत लिंग के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता है। वे अधिक से अधिक समय अपने मित्रों के साथ बिताना पसन्द करती है। इस समय में अनावश्यक रोक–टोक से उनके मन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

सह–शिक्षा में पढ़ने वाली बालिकाओं में शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा अधिक देखने में आती है। फलस्वरूप वे निडर, आत्मविश्वासी तथा जोखिम उठाने वाली होती है।

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाएँ एक निश्चित दायरे में रहती है। वे केवल स्त्रियोचित गुणों से ही अवगत हो पाती है फलस्वरूप वे स्त्रियोचित कार्यों को ही निपुणता से कर पाती है, क्योंकि पुरूषों की प्रकृति तथा स्वभाव से वे विवाहोपरान्त ही परिचित हो पाती है, वह भी पूर्णतया नहीं।

निदेश राय द्विवेदी ने कहा है कि ''पराधीनता का जीवन जीती माँओं को स्त्री जीवन पराधीनता में ही सुरक्षित नजर आता है। इसी कारण वे उन्हें ऐसी शिक्षा देती है।''

सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी ने कहा है कि ''स्त्री पुरूष समानता का मतलब यह नहीं है कि स्त्री पुरूष में जो शारीरिक एवं मानसिक अंतर है उसे दूर करके एक यूनिसेक्स (एकलिंगी) समाज का निर्माण किया जाये।''

बचपन में किसी भी प्रकार से शोषण का शिकार हुई बालिकाएँ किशोरावस्था आने पर मानसिक अवसाद तथा असंतुलन से ग्रस्त दिखाई देती है। इसके कारण वे आगे पढ़ना, स्कूल जाना नहीं चाहती हैं। बालिकाओं को इसी भय, असुरक्षा की भावना, अवसाद, तनाव तथा असंतुलन की स्थिति से बाहर निकालने की अत्यधिक आवश्यकता है। समय पर यदि इनकी समस्याओं को नहीं समझा गया तो स्थिति और भयावह हो सकती है, अतः बालिकाओं से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान की आवश्यकता को शोधकर्ता ने महसूस किया और इस विषय को शोध के लिए चुना ह।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में जोखिम स्वीकार करने का स्तर क्या है? ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में नारी समानता मनोवृत्ति का स्तर क्या है? स्वर्ण, पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाओं में जोखिम स्वीकार करने, नारी समानता मनावृत्ति एवं व्यावसायिक रूचि का स्तर क्या है? स्वर्ण एवं पिछड़ी जाति की बालिकाओं में जोखिम स्वीकार करने, नारी समानता मनोवृत्ति एवं व्यावसायिक रूचि में क्या अन्तर है? पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाओं में जोखिम स्वीकार करने, नारी समानता मनोवृत्ति एवं व्यावसायिक रूचि में क्या अन्तर है?

संदर्भ ग्रंथ

1. कपिल, डॉ. एच.के. (2000) हर प्रसाद भार्गव, 4/230 कचहरी घाट, आगरा–4
2. हेनरी, ई. गैरिट (1975) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग। तृतीय संस्करण, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
3. भार्गव, महेश (1988) आधनिक मनोवैनिक परीक्षण एवं मापन, सातवाँ संस्करण, हर प्रसाद भार्गव, आगरा
4. पाठक, पी.डी. शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. पुरोहित, जगदीश नारायण भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्य। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. श्रीवास्तव ज्योति, सुषमा (2002) ''पारिवारिक वातावरण का किशोरों की शैक्षिक रूचि एवं आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्यन'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वॉल्यूम–21
7. शर्मा राजेश, निगम भूपेन्द्र (2001) शोध विषय ''विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन के विकास में उनके आकांक्षा स्तर की भूमिका'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वॉल्यूम 21, अंक 2
8. शर्मा, डॉ, आर.ए. (1986) इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नियर राजकीय इन्टर कॉलेज, मेरठ (यू.पी.)

9. अस्थाना और अस्थाना (1994) ''मनोविज्ञान और शिक्षण में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, (उ.प्र.),
10. डोडियाल एण्ड फाटक (1982) शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र
11. Gyan-The Journal of Education Advance Institute of Management, Ghaziabad, India
12. Journal of Indian Education (2007) National Council of Educaonal Research and trianing. Shri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
13. Meri-Journal of Educaion Vol. II Oct. 007 Management Education and research Institutie, 53-54, Institutional Area (Opp. D-Block), Janak Puri, New-110058
14. Perspectives in Education (2007) Society for Educational Research and Development, 46, Harinagar, Rececourse, Baroda-390007
15. Research Trends in Educaion (2007) Centre of Advanced Study in Educaiton, Faculty of Educaiton and Psychology. The Maharaja Sayajirao University of Baroda-390002
16. The Journal of Educational Research (2004) Heldref Publication, 1319, Eighteen Street, N.W., Washington, D.C. – 20036-1802.
17. The Journal of Educational Research (2007) Heldref Publications, 1319, Eighteenth Street, NW, Washington DC, 20036-1802.
18. UGC Sponsored Conference Papers (2005) Shah Goverdhanlal Kabra Techers' College (CTE), Jodhpur (Raj.) INDIA.
19. बुनियादी शिक्षा (2006) विद्याभवन बुनिवायादी शिक्षा संदर्भ केन्द्र, रामगिरी, जयपुर (राज.)
20. विमर्श (2003) शिक्षा–विमर्श, दिगन्तर, टोडी रमजानीपुरा, जगतपुरा, जयपुर – 302025
21. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2002) भारतीय शिक्षा शोध संस्थान सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ (विद्या भारती से सम्बद्ध)
22. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2003) भारतीय शिक्षा शोध संस्थान सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ (विद्या भारती से सम्बद्ध)
23. परिप्रेक्ष्य (2003) राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना और प्रशासन संस्थान (निप्पा), नई दिल्ली
24. परिप्रेक्ष्य (2004) राष्ट्रीय शैक्षणिक योजना और प्रशासन संस्थान (निप्पा), नई दिल्ली
25. प्रौढ़ शिक्षा (2004) भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, 17–बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, महात्मा गांधी माग्र, नई दिल्ली–110002
26. प्रौढ़ शिक्षा (2004, 2007) भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, 17–बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110002
27. लोकमान्य शिक्षक (2006) लोकमान्य तिलक शि.प्र. महाविद्यालय (सी.टी.ई.) जनार्दन राय नगर, राज. विद्यापीठ विश्वविद्यालय, डबोक, उदयपुर
28. अखण्ड ज्योति (2006) खण्ड ज्योति ;अक्टूबर, 2006 ''नारी बिना साहित्य जगत है अधूरा'' अखण्ड ज्योति संस्थान
29. महिला शिक्षा (2009) महिलाओं के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं'' स्वामी प्रकाशन,
30. शिविरा पत्रिका(2009)''महिलाओं का सामाजिक सशक्तीकरण'' वर्ष – 49, अंक – 9, शिविरा पत्रिका, बीकानेर
31. www hodhganga.com
32. www.shodhgangotri.com
33. www.narisamanta.com
34. www.narishiksha.com
35. www.jokhimsvikarna.com
36. www.wikipedia.com